REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 7 | APRIL - 2019

भारत में उच्च शिक्षा की दशा व दिशा

श्री भूपेन्द्र कुमार महेन्द्रा
अस्सिटेंट प्रोफेसर ईएएफएम
डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर.

शोधसार

आज का दौर वैश्वीकरण का है। इस समय विश्व समुदाय एक-दूसरे की संस्कृति को समझने की कोशिश कर रहे है। हर मनुष्य विश्व की किसी भी संस्कृति को धारण कर सकता है। अपनी संस्कृति के अनुचित मूल्यों को अस्वीकार कर सकता है। किसी भी देश की गरिमा इसी में होती है कि कोई व्यक्ति अपने ही राष्ट्र की संस्कृति व उसके मूल्यों को जानें व उनको धारण करें, व विदेशी राष्ट्रों तथा बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के द्वारा विवशतावश स्वीकार किये गये मूल्यों का परित्याग करें। यह कार्य केवल शिक्षा के द्वारा ही संभव है। शिक्षा आदर्शवादी हो, गुणवत्तापूर्वक हो, इससे कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण बात है कि शिक्षा व्यावहारिक हो, रोजगारपरक हो, वह केवल पाठ्यपुस्तकों में ही बंद होने वाली सीख न दे, वह हमारे चरित्र का भी निर्माण करें आज की शिक्षा किसी ओर ही दिशा में जा रहीं है। जब बात उच्च शिक्षा की हो स्थिति और भी गंभीर हो जाती है। उच्च शिक्षा की वर्तमान हालत तो खराब है ही इसका प्रवाह ही विपरीत दिशा में हो रहा है। व्यक्ति समाज व शिक्षाविद् सभी मिलकर उच्च शिक्षा के गुणात्मक व जीवन-मूल्यों के व्यावहारिक रूप को सामने लाने का प्रयास करें, तो निश्चित रूप से यह राष्ट्रहित में भी होगा और मानव-हित में होगा।

मुख्य शब्द – *उच्च शिक्षा, संस्थान, रोजगार, विश्वविद्यालय, संस्कार मूल्य*

उद्देश्य – इस आलेख का उद्देश्य उच्च शिक्षा के वर्तमान परिदृश्य को स्पष्ट करना व इसकी दिशा को रेखांकित करना है। यह शोध यह स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि क्यों हमारी उच्च शिक्षा का स्तर निरंतर गिरता जा रहा है। इसके जिम्मेदार कारक कौनसे है, सरकारी नीतियाँ व स्वयंसेवी संगठनों व सामाजिक संगठनों की भूमिका उच्च शिक्षा को किस प्रकार से पुनः फलीभूत कर सकते है। यह आलेख उन शोधार्थियों की मदद भी करेगा जो उच्च शिक्षा की वर्तमान धारा से परिचित नहीं है।

शोध प्रविधि – इस शोध आलेख में लिखित सामग्री व सहायक आलेखों व पत्रिका से ली गई है। शोध में विश्लेषणात्मक व तर्क-चिंतन विधि का प्रयोग किया गया है।

उच्च शिक्षा की वर्तमान : दशा व दिशा – उच्च शिक्षा का निरंतर विस्तार हो रहा है इसमें कोई संदेह नहीं। हर बजट में भी शिक्षा पर होने वाला व्यय बढ़ाया जाता है। यह अलग बात है कि जितना व्यय शैक्षणिक संस्थानों पर होना चाहिए, उतना नहीं किया जा रहा है। फिर भी यह तथ्य है कि दसवीं पंचवर्षीय योजना में जहाँ शिक्षा पर व्यय ६.७ प्रतिशत था वह ११वीं पंचवर्षीय योजना में १७.६ प्रतिशत हो गया है। देश में केन्द्रीय विश्वविद्यालयों की संख्या १७ से बढ़कर ४४ हो गयी है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों की संख्या ७ से बढ़कर १८ हो गयी है। आई.आई.एम. की संख्या ६ से बढ़कर १६ हो गयी

है। इसके साथ ही महाविद्यालयों व छात्र-छात्राओं की संख्या में भी विगत कुछ वर्षों में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। पिछले कुछ वर्षो से भारत ने सेवा के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। सूचना प्रौद्योगिकी से लेकर अनेक ऐसे क्षेत्र है जिनमें भारतीय नवयुवक अन्य देशों के लोगों से बाजी मार रहे है। लेकिन इतना होना ही पर्याप्त नहीं है। यदि हम उच्च शिक्षा के स्तर का आंकलन करे तो विश्व के २०० शीर्ष विश्वविद्यालयों में भारत का एक भी संस्थान शामिल नहीं हो पाता है यह बड़ी चिंताजनक बात लगती है और इससे भी अधिक नकारात्मक पहलू यह है कि हमारे शिक्षण संस्थानों में निराश व हताश नौजवानों की भीड़ बढ़ा दी है। ना ये कोई अच्छा रोजगार पा सके और ना ही कोई हुनर सीख पाएं जिससे उनकी आजीविका चलती रहें। केवल मात्र डिग्रियों व व्यावसायिक कोर्सो के भंवर में उसे ऐसा फंसाया गया है कि उसके हाथ केवल निराशा ही हाथ लगी है।

भारत अपने आपको ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था के तौर पर स्थापित करने की राह में आगे बढ़ रहा है। उच्च शिक्षा का लक्ष्य विचारों और नवाचारों के विकास के लिए एक केन्द्र स्थापित करना है जो व्यक्तियों को बुद्धिशील बनाने के साथ देश के सामाजिक-आर्थिक विकास को गतिशीलता प्रदान करें। वर्तमान में उच्च शिक्षा की स्थिति को निम्न बिन्दुओं से समझा जा सकता है -

१. मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने देश में अनुसंधान व नवाचार संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए कई नयी योजनायें शुरू की है।
२. उच्च शिक्षा को रोजगारपरक व बहुविषयक दृष्टिकोण से विकसित किया जा रहा है।
३. युवाओं को वर्तमान में अनेक कौशल से युक्त प्रशिक्षण दिया जा रहा है।
४. समय-समय पर पाठ्यक्रम में बदलाव व संस्थानों को अधिक स्वायतता दी जा रही है।

निष्कर्ष -

उच्च शिक्षा की वर्तमन दिशा व दशा देखने से यह तो विदित हो ही जाता है कि जो स्वप्न शिक्षा नीति-निर्माताओं ने देखा था वों साकार रूप नहीं ले सकता है। कोई भी नीति हों - वह कारगर तभी सिद्ध होती है। जन नियति साफ हों। मंशा, स्पष्ट होनी चाहिए कि वह नीति हमसे क्या अपेक्षा रख रही है। क्या उस नीति को व्यावहारिक तौर पर लागू किया जा सकता है। यदि हाँ तो उसके क्या संभावित परिणाम हो सकते है। भारत में अभी हाल ही में नयी शिक्षा नीति २०१६ का मसौदा ३१ मई, २०१६ को प्रस्तुत किया गया है जो अभी सरकार के पास विचाराधीन है। नई नीति में २०३५ तक एकल दाखिला अनुपात ५० प्रतिशत करना है। देश में प्रत्येक जिले में गुणवत्तापूर्वक विश्वविद्यालय खोलना व शिक्षण संस्थाओं की स्वायत्तता बढ़ाने जैसे लक्ष्य तय किये गये है।

भारत को एक शक्तिशाली ज्ञान आधारित राष्ट्र बनाने के लिए उच्च शिक्षा में व्याप्त लैंगिक असमानता को मिटाना होगा। शिक्षा में सुधारों के साथ देश की संस्कृति व नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देने का प्रयास किया जाना चाहिए तभी डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का स्वप्न ''हमें सांस्कृतिक परम्पराओं को सुरक्षित रखना होगा व विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय करना होगा'' साकार हो सकेगा।

संदर्भ -

१. उच्च शिक्षा की दिशा व दशा प्रो. वी. एस. दीक्षित, दिल्ली विश्वविद्यालय
२. उच्च शिक्षा की दिशा व दशा डॉ. सुरेन्द्र वर्मा
३. उच्च शिक्षा की दिशा व दशा, श्री विनय तिवारी